बी॰ ए॰ तृतीय वर्ष Section C -1-
डॉ॰ शर्मिला यादव, हिन्दी विभाग

अति महत्त्वपूर्ण प्रश्न :—

1. संक्षेपण :—

संक्षेपण और भावार्थ दोनों में ही भावों और विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है संक्षेपण की अपनी सीमाएँ निश्चित है। यह सदैव मूल अवतरण का एक तिहाई ही होगा, अत: इसमें शब्द गणना की आवश्यकता होती है।

संक्षेपण के लिए सामान्य अनुदेश :-

(1) संक्षेपण के लिए मूल अवतरण को एक या अनेक बार पढ़कर अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। पढ़ते समय अवतरण की आवश्यक एंव महत्त्वपूर्ण बातों को रेखांकित कर लेना चाहिए।

(2) रेखांकित अंशो को एक बार पुन: पढ़कर संक्षे का प्रथम प्रारूप तैयार करना चाहिए।

(3) जब संक्षेपण का प्रथम प्रारूप तैयार हो जाए तो उसकी तुलना मूल अवतरण से कर लें। यदि उ कोई महत्त्वपूर्ण बात छूट गई हो तो उसे समावि कर लें और यदि अनावश्यक बात आ गई तो उसे निकाल देना चाहिए।

(4) इसके उपरांत मूल अवतरण की शब्द-संख्या
(5) संक्षेपण सदैव अन्य पुरुष में ही होना चाहिए प्रत्यक्ष कथन को परोक्ष कथन में बदल देना चाहिए।

6. संक्षेपण की भाषा सरल, सुस्पष्ट, शुद्ध एवं क्रमबद्ध होनी चाहिए।

7. मूल भाव के अनुरूप शीर्षक का चयन करना चाहिए।

8. शीर्षक चयन के उपरांत संक्षेपण का अंतिम प्रारूप लिखना चाहिए

उदाहरण :-

जीवन और साहित्य परस्पर एक दूसरे के बिना टिक नहीं सकते। साहित्यकार जनता की मानसिक क्षुधा को तृप्त करके उसे सही दिशा में चलने को इंगित करता है। साहित्य की भोज्य वस्तु है जीवन। साहित्य जीवन का सच्चा प्रतिबिम्ब है। ~~इसी~~ इसको इतिहासकार नहीं साहित्यकार लिखता है। मनुष्य जीवन समाज से जुड़ा होता है और समाज साहित्य से। साहित्य में राष्ट्रीय जीवन को सच्चाई के साथ अभिव्यक्त किया जाता है।

प्रश्न

(क) उपयुक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

(ख) ऊपर दिए गए गद्यांश का संक्षेपण पचास शब्दों में कीजिए।

शीर्षक :- जीवन और साहित्य

संक्षेपण :- जीवन और साहित्य अन्योन्याश्रित हैं। साहित्यकार समाज को मानसिक संतुष्टि और सही मार्गदर्शन देता है। इसके लिए व्यक्ति और समाज (समान) महत्वपूर्ण है। चूँकि साहित्यकार भी समाज का ही अंग है और उसे सामाजिक परिस्थितियाँ भी प्रभावित करती हैं अतएव उसके साहित्य में जगत का वास्तविक रूप प्रतिबिम्बित होता है।

पल्लवन :
"किसी सुसंगठित एवं गुम्फित विचार अथवा भाव के विस्तार को पल्लवन कहते हैं।"

पल्लवन की व्याख्या :
पल्लवन में कथन के मूल भाव का ही विस्तार किया जाता है।

पल्लवन के लिए महत्वपूर्ण अनुदेश

1. सबसे पहले जिस वाक्य या कथन का पल्लवन करना है, उसे ध्यानपूर्वक पढ़ लें ताकि उसका मूल भाव अच्छी तरह समझ में आ जाये।

2. सूक्ति या वाक्य के मूलभाव को ध्यान में रखकर मनन करें और सम्बंधित बातों को अलग लें ताकि पल्लवन में आपकी सुविचारित बात छूटने न पाए।

3. इसके उपरांत उसके मूल भाव को पुष्ट करने के लिए आवश्यक उदाहरणों और विवरणों को भी लिख लेना चाहिए, इससे पल्लवन का प्रथम प्रारूप तैयार हो जाएगा।

4. 'पल्लवन' की भाषा सरल, सुस्पष्ट एवं व्याकरणानुमोदित होनी चाहिए।

5. 'पल्लवन' सदैव अन्य पुरुष में ही करना चाहिए।

6. 'पल्लवन' में पुनरुक्ति दोष से अवश्य बचना चाहिए।

7. 'पल्लवन' के प्रथम और अंतिम वाक्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। प्रथम वाक्य में वाक्य व्यक्त होना चाहिए और अंतिम वाक्य में पूरे विचार का समाहार होना चाहिए।

कुछ महत्त्वपूर्ण उदाहरण:-

(1) 'करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
(2) "गरीबी क्रांति और अपराध की जननी है"
(3) 'जीवन में लम्बी आयु का नहीं, उत्तम कर्मों का महत्त्व है।'
(4) 'वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।'
(5) 'महत्त्वकांक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में पलता है।
(6) 'विद्या ही उन्नति का आधार है।
(7) 'भावुकता बुद्धि की चेरी है'।
(8) 'सुख विश्वास की नींव पर आधारित है'।
(9) 'सफलता के पीछे परिश्रम की अथक कहानी है।
(10) 'गरीबी मनुष्य जनित है, भाग्य जनित नहीं'।
(11) 'जो स्वयं विचारक होगा, वही सफल होगा'।
(12) 'जियो और जीने दो।
(13) 'मानव प्रेम सबसे बड़ा प्रेम।
(14) अनियंत्रित भोग वृत्ति अशांति का कारण बनती है।
(15) 'जीवन एक फूल है और प्रेम उसकी सुगंध'।